

## अध्याय ३

### नई आर्थिक नीति या अधिक सुधार

प्र १ आर्थिक सुधार क्या हैं?

उत्तर: सन् १९९१ से भारत सरकार ने देश को आर्थिक संकट से निकालने तथा विकास को गति को तेज करने के लिए विभिन्न आर्थिक सुधार आरंभ किए। इसे आर्थिक सुधार कहते हैं।

प्र २. आर्थिक सुधारों की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर: इसकी आवश्यकता निम्न कारणों से पड़ी:-

- राजकोषीय घाटे में वृद्धि
- प्रतिकूल भुगतान संतुलन में वृद्धि
- खाड़ी संकट
- विदेशी विनिमय के भंडारों में कमी
- कीमतों में वृद्धि
- सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का कार्य संतोषजनक न होना।

प्र ३. नई आर्थिक नीति के मुख्य विशेषताओं को बताइए।

उत्तर: नई आर्थिक नीति के तीन मुख्य तत्व हैं:-

अ) उदारीकरण:- सरकार द्वारा लगाये गये प्रत्यक्ष या भौतिक नियंत्रणों से अर्थव्यवस्था की मुक्ति  
उदारीकरण के अंतर्गत आर्थिक सुधार

- औद्योगिक लाइसेंसिंग का उन्मूलन
- उत्पादन क्षेत्र से आरक्षण हटाना
- उत्पादन क्षमता का विकास
- पूंजीगत पदार्थों के आयात की स्वतंत्रता

ब) निजीकरण:- यह वह सामान्य प्रक्रिया है जिसके द्वारा निजी क्षेत्र किसी सरकारी उद्यम का मालिक बन जाता है या उसका प्रबंध करता है।

### निजीकरण के उपाय:

- सार्वजनिक क्षेत्र का संकुचन
- सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में सरकार का विनिवेश
- सार्वजनिक उद्यमों के शेयरों की विक्री।

स) वैश्वीकरण : इससे अभिप्राय विश्व अर्थव्यवस्था में आये खुलेपन, बढ़ती हुई परस्पर आर्थिक निर्भरता तथा आर्थिक एकीकरण के फैलाव से हैं।

### वैश्वीकरण के उपाय:

- विदेशी विशेष की साम्या सीमा में वृद्धि
- आर्थिक परिवर्तनीयता
- दीर्घकालीन व्यापार नीति

ड) नई आर्थिक नीति के सकारात्मक प्रभावों को बताइए।

- उत्तर: - एक कंपायमान अर्थव्यवस्था
- औद्योगिक उत्पादन के लिए स्फूर्तिदायक
  - राजकोषीय घाटे पर रोक
  - मुदा-स्फीति पर रोक
  - उपभोक्ता की प्रमुख
  - विदेशी विनिमय कोषों में पर्याप्त वृद्धि
  - निजी विदेशी निवेश का प्रवाह
  - एकापिकारी बाजार से प्रतियोगी बाजार

प्र ५ नई आर्थिक के नकारात्मक प्रभावों को बताइए।

- उत्तर: - कृषि की अवट्टेलना
- विकास प्रक्रिया का शहरी केन्द्रीयकरण
  - आर्थिक औपनिवेशवाद
  - उपभोक्तावाद का फैलाव
  - एक-तरीका संवृद्धि प्रक्रिया
  - सांस्कृतिक हास